सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
☆	सम्यग्दृष्टि जीव अपने को सम्यक्त्व प्रगट होने की बात श्रुतज्ञान द्वारा बराबर जानते हैं।	११२
☆	सम्यग्दर्शन सम्बन्धी कुछ प्रश्नोत्तर	११७
☆	ज्ञान-चेतना के विधान में अन्तर क्यों हैं ?	११९
	ज्ञान-चेतना के सम्बन्ध में विचारणीय नव विषय	१२०
☆	अक्रमिकविकास और क्रमिक विकास का दृष्टान्त	१२१
☆	इस विषय के प्रश्नोत्तर और विस्तार	१२३
☆	सम्यग्दर्शन और ज्ञान-चेतना में अन्तर	१२८
☆	चारित्र न पले फिर भी उसकी श्रद्धा करनी चाहिए	१२९
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन का दूसरा अर्थ	१२९
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट - २	
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन	१३१
☆	निश्चयसम्यग्दर्शन क्या है और उसे किसका अवलम्बन	१३१
☆	भेद-विकल्प से सम्यग्दर्शन नहीं होता	१३२
☆	विकल्प से स्वरूपानुभव नहीं हो सकता	१३३
☆	सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान का सम्बन्ध किसके साथ	१३४
☆	श्रद्धा-ज्ञान सम्यक् कब हुए	१३४
☆	सम्यग्दर्शन का विषय, मोक्ष का परमार्थ-कारण	१३५
☆	सम्यग्दर्शन ही शान्ति का उपाय है सम्यग्दर्शन ही संसार का नाशक है	१३६
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट - ३	
☆	जिज्ञासु को धर्म किस प्रकार करना	१३७
☆	पात्र जीव का लक्षण	१३७
☆	सम्यग्दर्शन के उपाय के लिये ज्ञानियों के द्वारा बताई गई क्रिया	१३७
☆	श्रुतज्ञान किसे कहना	१३८
☆	श्रुतज्ञान का वास्तविक लक्षण-अनेकान्त	१३८
☆	भगवान भी दूसरे का कुछ नहीं कर सके	१३९
☆	प्रभावना का सच्चा स्वरूप	१३९
☆	सच्ची दया (अहिंसा)	१३९
☆	आनन्दकारी भावनावाला क्या करे	१३९
☆	श्रुतज्ञान का अवलम्बन ही प्रथम क्रिया है	१४०
☆	धर्म कहाँ और कैसे ?	१४१
☆	सुख का उपाय ज्ञान और सत् समागम	१४२
☆	जिस ओर की रुचि उसी का रटन	१४३
☆	श्रुतज्ञान के अवलम्बन का फल-आत्मानुभव	१४५
☆	सम्यग्दर्शन होने से पूर्व	१४५
☆	धर्म के लिये प्रथम क्या करें	१४७
☆	सुख का मार्ग, विकार का फल, असाध्य, शुद्धात्मा	१४७-१४८
☆	धर्म की रुचिवाले जीव कैसे होते हैं ?	१४८
☆	उपादान-निमित्त और कारण-कार्य	१४९
☆	अन्तरङ्ग-अनुभव का उपाय-ज्ञान की क्रिया	१४९
☆	ज्ञान में भव नहीं है	१५०
☆	इस प्रकार अनुभव में आनेवाला शुद्धात्मा कैसा है ?	१५०
☆	निश्चय-व्यवहार	१५१
☆	सम्यग्दर्शन होने पर क्या होता है	१५१
☆	बारम्बार ज्ञान में एकाग्रता का अभ्यास	१५१
☆	अन्तिम अभिप्राय	१५३
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट-४	
☆	तत्त्वार्थ श्रद्धान को सम्यग्दर्शन का लक्षण कहा है, उस लक्षण में अव्याप्ति आदि दोष का परिहार	१५४-१६५
	प्रथम अध्याय का परिशिष्ट - ५	
☆	केवलज्ञान [केवली का ज्ञान] का स्पष्टरूप और उनके शास्त्रों का आधार	१६६-१७७
	अध्याय दूसरा	
१.	जीव के असाधारण भाव	१७८
☆	औपशमिकादि पाँच भावों की व्याख्या	१७८
☆	यह पाँच भाव क्या बतलाते हैं ?	१७९
☆	उनके कुछ प्रश्नोत्तर	१८०
☆	औपशमिकभाव कब होता है ?	१८१

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
☆	उनकी महिमा	१८२
☆	पाँच भावों के सम्बन्ध में कुछ स्पष्टीकरण	१८३
☆	जीव का कर्त्तव्य	१८५
☆	पाँच भावों के सम्बन्ध में कुछ विशेष स्पष्टीकरण	१८६
☆	इस सूत्र में नय-प्रमाण की विवक्षा	१८६
२.	भावों के भेद	१८७
३.	औपशमिक भाव के दो भेद	१८७
☆	क्षायिकभाव के ९ भेद	१८८
५.	क्षायोपशमिक भाव के १८ भेद	१८९
६.	औदयिक भाव के २१ भेद	१९०
७.	पारिणामिकभाव के तीन भेद	१९१
☆	उनके विशेष स्पष्टीकरण	१९२
☆	अनादि अज्ञानी के कौन से भाव कभी नहीं हुए?	१९३
☆	औपशमिकादि तीन भाव कैसे प्रगट होते हैं?	१९३
☆	कौन से भाव बन्धरूप हैं?	१९४
८.	जीव का लक्षण	१९४
☆	आठवें सूत्र का सिद्धान्त	१९५
९.	उपयोग के भेद	१९६
☆	साकार-निराकार	१९७
☆	दर्शन और ज्ञान के बीच का भेद	१९८
☆	उस भेद की अपेक्षा और अभेद की अपेक्षा से दर्शनज्ञान का अर्थ	१९९
१०.	जीव के भेद	२००
☆	संसार का अर्थ	२००
☆	द्रव्यपरिवर्तन, क्षेत्रपरिवर्तन, काल परिवर्तन, भावपरिवर्तन का स्वरूप	२०१-२०५
☆	भावपरिवर्तन का कारण मिथ्यात्व है	२०५
☆	मानव-भव की सार्थकता के लिये विशेष	२०६
११.	संसारी जीवों के भेद	२०७
१२.	संसारी जीवों के अन्य प्रकार से भेद (त्रस-स्थावर)	२०९
१३.	स्थावर जीवों के भेद	२०९
	इन पृथ्वी आदिकों के चार-चार भेद	२१०
१४.	त्रस जीवों के भेद	२१०
१५.	इन्द्रियों की संख्या	२११
१६.	इन्द्रियों के मूल-भेद	२१२
१७.	द्रव्येन्द्रिय का स्वरूप	२१२
१८.	भावेन्द्रिय का स्वरूप (लब्धि-उपयोग)	२१३
	इस सूत्र का सिद्धान्त	२१४
१९.	पाँच इन्द्रियों के नाम और क्रम	२१५
२०.	इन्द्रियों के विषय	२१५
२१.	मन का विषय	२१६
२२.	इन्द्रियों के स्वामी	२१७
२३.	इन्द्रियों के स्वामी और क्रम	२१७
२४.	सैनी किसे कहते हैं?	२१८
२५.	विग्रहगतिवान जीव को कौन-सा योग है?	२१८
२६.	विग्रहगति में जीव और पुद्गलों का गमन कैसे होता है?	२१८
२७.	मुक्त जीवों की गति कैसी होती है?	२१९
२८.	संसारी जीवों की गति और उनका समय	२२०
२९.	अविग्रहगति का समय	२२१
३०.	अविग्रहगति में आहारक अनाहारक की व्यवस्था	२२१
३१.	जन्म के भेद	२२२
३२.	योनियों के भेद	२२३
३३.	गर्भ-जन्म किसे कहते हैं?	२२४
३४.	उपपादजन्म किसे कहते हैं?	२२५
३५.	सम्मूर्च्छन जन्म किसके होता है?	२२५
३६.	शरीर के नाम तथा भेद	२२५
३७.	शरीरों की सूक्ष्मता का वर्णन	२२६
३८.	पहिले-पहिले शरीर की अपेक्षा आगे-आगे के शरीरों के प्रदेश	२२६-२२७
३९.	थोड़े होंगे या अधिक	२२७
४०.	तैजस-कार्माण शरीर की विशेषता	२२७
४१.	तैजस-कार्माण शरीर की अन्य विशेषता	२२७
४२.	वे शरीर संसारी जीवों के अनादि काल से हैं	२२८
४३.	एक जीव के एक साथ	

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	कितने शरीरों का सम्बन्ध ?	२२९
४४.	कार्मण शरीर की विशेषता	२२९
४५.	औदारिक-शरीर का लक्षण	२३०
४६.	वैक्रियिक-शरीर का लक्षण	२३१
४७.	देव और नारकियों के अतिरिक्त दूसरों के वैक्रियिक शरीर होता है या नहीं ?	२३१
४८.	वैक्रियिक के अतिरिक्त किसी अन्य शरीर को भी लब्धि का निमित्त है ?	२३१
४९	आहारक शरीर का स्वामी तथा उसका लक्षण	२३२
	आहारक शरीर का विस्तार से वर्णन	२३२-२३३
५०.	लिङ्ग-वेद के स्वामी	२३३
५१.	देवों के लिङ्ग	२३४
५२.	अन्य कितने लिङ्गवाले हैं ?	२३४
५३.	किनकी आयु अपवर्तन (अकाल मृत्यु) रहित है ?	२३५
☆	**अध्याय २ का उपसंहार**	**२३६**
☆	पारिणामिकभाव के सम्बन्ध में	२३७
☆	धर्म करने के लिये पाँच भावों का ज्ञान उपयोगी है ?	२३८
☆	उपादान और निमित्त कारण के सम्बन्ध में	२३८
☆	पाँच भावों के साथ इस अध्याय के सूत्रों के सम्बन्ध का स्पष्टीकरण	२४१
☆	निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध	२४६
☆	तात्पर्य	२४३
	अध्याय तीसरा	
☆	भूमिका	२४७
☆	अधोलोक का वर्णन	२४८
१.	सात नरक-पृथिवियाँ	२४८
२.	सात पृथिवियों के बिलों की संख्या	२४९
☆	नरक गति होने का प्रमाण	२४९
३.	नारकियों के दुखों का वर्णन	२५०
४.	नारकी जीव एक-दूसरे को दुःख देते हैं	२५१
५.	विशेष दुःख	२५१
६.	नारकों की उत्कृष्ट आयु का प्रमाण	२५२

सूत्र सं.	विषय	पृष्ठ सं.
☆	सम्यग्दृष्टियों को नरक में कैसा दुःख होता है ?	२५३
७.	मध्यलोक का वर्णन, कुछ द्वीप समुद्रों के नाम	२५५
८.	द्वीप और समुद्रों का विस्तार और आकार	२५६
९.	जम्बूद्वीप का विस्तार और आकार	२५६
१०.	उसमें सात क्षेत्रों के नाम	२५६
११.	सात विभाग करनेवाले छह पर्वतों के नाम	२५७
१२.	कुलाचल पर्वतों का रङ्ग	२५७
१३.	कुलाचलों का विशेष स्वरूप	२५७
१४.	कुलाचलों के ऊपर स्थित सरोवरों के नाम	२५७
१५.	प्रथम सरोवर की लम्बाई-चौड़ाई	२५७
१६.	प्रथम सरोवर की गहराई	२५८
१७.	उसके मध्य में क्या है ?	२५८
१८.	महापद्मादि सरोवर तथा उनमें कमलों का प्रमाण ह्रदों का विस्तार आदि	२५८
१९.	छह कमलों में रहनेवाली छह देवियाँ	२५९
२०.	चौदह महानदियों के नाम	२५९
२१.	नदियों के बहने का क्रम	२५९
२२.	इन चौदह महानदियों की सहायक नदियाँ	२६०
२३.	भरत क्षेत्र का विस्तार	२६०
२४.	आगे के क्षेत्र और पर्वतों का विस्तार	२६१
२५.	विदेह क्षेत्र के आगे के पर्वत क्षेत्रों का विस्तार	२६१
२६.	भरत और ऐरावत क्षेत्र में कालचक्र का परिवर्तन	२६२-२६३
२७.	भरत-ऐरावत के मनुष्यों की आयु तथा ऊँचाई तथा मनुष्यों का आहार	२६३
२८.	अन्य भूमियों की काल-व्यवस्था	२६३
२९.	हैमवतक इत्यादि क्षेत्रों में आयु	२६३
३०.	हैरण्यवतकादि क्षेत्रों में आयु	२६४
३१.	विदेह क्षेत्र में आयु की व्यवस्था	२६४
३२.	भरतक्षेत्र का विस्तार दूसरी तरह से	२६४
३३.	घातकी खण्ड का वर्णन	२६५